बपतिस्मे पर पुनर्विचार

पापों की क्षमा के लिए (मरकुस 1:4; लूका 3:3) यूहन्ना मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था (मत्ती 3:2)। यद्यपि सुसमाचार की पुस्तकों में उसके द्वारा परिवर्तित होने वालों के विश्वास करने या मन फिराने की बात नहीं लिखी गई है, परन्तु यह ज़रूर लिखा गया है कि उन्होंने बपतिस्मा लिया था (मत्ती 3:6; मरकुस 1:5; लूका 3:21; यूहन्ना 3:23; 4:1)। इस तथ्य से कि उन्होंने बपतिस्मा लिया था, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि उन्होंने उसके संदेश पर विश्वास किया और मन फिराया था। कहीं भी यह नहीं लिखा है कि यूहन्ना ने लोगों को अपने पापों का अंगीकार करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने किया (मत्ती 3:6)।

यीशु ने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था (मत्ती 3:13-17)। यूहन्ना ने गवाही दी कि बपतिस्मे के द्वारा ही यीशु की पहचान हुई थी (यूहन्ना 1:31)। प्रेरित यूहन्ना सम्भवत: इन कथनों में यीशु के बपतिस्मे का उल्लेख कर रहा था: ''यही है वह, जो पानी और लहू के द्वारा आया था; अर्थात यीशु मसीह: वह न केवल पानी के द्वारा, वरन पानी और लहू दोनों के द्वारा आया था''; ''और गवाही देने वाले तीन हैं: आत्मा, पानी, और लहू'' (1 यूहन्ना 5:6क, 7, 8क)।

यीशु के यूहन्ना से अधिक लोग बपतिस्मा लेने के लिए आए होंगे (यूहन्ना 3:22, 26; 4:1)। सुसमाचार की पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि इन लोगों ने बपतिस्मा लिया था, परन्तु हमें कहीं भी यह लिखा हुआ नहीं मिलता कि उन्होंने विश्वास किया, मन फिराया या अंगीकार किया था। इससे ज़्या हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उन्होंने इनमें से एक भी बात केवल इसलिए नहीं की ज़्योंकि उनका विशेष रूप से उल्लेख नहीं है ? बपतिस्मे का उल्लेख होने और दूसरी बातों का न होने के कारण हम बपतिस्मे के महत्व को कैसे कम कर सकते हैं ?

हम दृढ़ता से यह दावा नहीं कर सकते कि प्रेरितों को बपतिस्मा मिला था, परन्तु यह अर्थ अवश्य निकाल सकते हैं कि उन्हें बपतिस्मा दिया गया था। यूहन्ना और यीशु के चेलों को बपतिस्मा दिया गया था (यूहन्ना 4:1)। यीशु ने अपने चेलों में से ही प्रेरित चुने थे (लूका 6:13), जिससे यह संकेत मिलता है कि उसने उन लोगों को ही चुना था जिन्होंने उसके चेले बनने के लिए बपतिस्मा लिया था।

प्रेरितों के काम में बपतिस्मा

प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहीं-कहीं लोगों के विश्वास करने और बपतिस्मा लेने

का उल्लेख मिलता है, जबकि उनके मन फिराने या अंगीकार करने के बारे में (जब तक कूश देश के मन्त्री का अंगीकार प्रमाणित न हो) कुछ नहीं लिखा गया। बपतिस्मे के साथ विश्वास करने का उल्लेख है (प्रेरितों 8:12; 18:8); परन्तु बपतिस्मे के साथ मन फिराने का उल्लेख केवल एक ही बार हुआ है (प्रेरितों 2:38), इसके साथ अंगीकार करने का उल्लेख नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहीं भी लोगों के अंगीकार करने की बात नहीं लिखी गई है। निश्चय ही, जहां केवल विश्वास या केवल बपतिस्मे का उल्लेख है वहां मन फिराने और अंगीकार की बात का अर्थ निकाल लिया जाता है। इससे यह संकेत मिलना चाहिए कि जब ''विश्वास'' शब्द आता है तो बपतिस्मे का भी अर्थ निकालना चाहिए, या जहां केवल बपतिस्मे का ही उल्लेख हो वहां विश्वास का अर्थ भी समझ लेना चाहिए।

यदि किसी का उद्धार मन फिराने और अंगीकार करने के बिना नहीं हो सकता, तो हर जगह यीशु के वचन को मानने वालों के बपतिस्मे के बजाय उनके इन कार्यों का ही उल्लेख क्यों नहीं किया गया है? यदि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है, तो इसका इतनी बार उल्लेख क्यों किया गया है, जबकि मन फिराव और अंगीकार का उल्लेख नहीं है (जिसे बहुत से धार्मिक सम्प्रदाय उद्धार के लिए आवश्यक मानते हैं)?

प्रेरितों के काम की पुस्तक में नीचे दी गई तुलनाएं की जा सकती हैं।

क. गैर मसीही लोगों को कितनी बार निम्न बातें करने के लिए कहा गया था:

1. विश्वास करो - तीन बार (प्रेरितों 8:37; 10:43; 16:31)।
2. मन फिराओ - तीन बार (प्रेरितों 3:19; 17:30; 26:20)।
   मन फिराओ और विश्वास करो - शून्य बार।
   मन फिराओ और बपतिस्मा लो- एक बार (प्रेरितों 2:38)।
3. बपतिस्मा लो- तीन बार (प्रेरितों 2:38; 10:48; 22:16)।
   बपतिस्मा लो और मन फिराओ - एक बार (प्रेरितों 2:38)।
   बपतिस्मा लो और अंगीकार करो- एक बार भी नहीं।
4. अंगीकार करो- एक बार भी नहीं।

ख. लूका ने कितनी बार इन लोगों द्वारा तुरन्त वचन को मानने की बात लिखी:

1. विश्वास किया - बारह बार (प्रेरितों 4:4; 8:12, 13; 9:42; 11:17, 21; 13:12; 13:48; 14:1; 17:12, 34; 18:8)।
2. बपतिस्मा लिया - नौ बार (प्रेरितों 2:41; 8:12, 13, 38; 9:18; 16:15, 33; 18:8; 19:5)।
3. मन फिराया - एक बार भी नहीं।
4. अंगीकार किया - एक बार (यदि प्रेरितों 8:37 प्रामाणिक है; वरना, एक बार भी नहीं)।
5. विश्वास किया और बपतिस्मा लिया था - तीन बार (प्रेरितों 8:12, 13; 18:8)।
6. मन फिराया और बपतिस्मा लिया - एक बार भी नहीं।
7. मन फिराया और अंगीकार किया - एक बार भी नहीं।

ग. कितनी बार लूका ने लिखा कि इन मानने वाले लोगों ने सुसमाचार की आज्ञा मानी:

1. विश्वास किया – तेरह बार (प्रेरितों 2:44; 4:32; 11:17; 14:23; 15:5; 16:1, 34; 18:27; 19:2, 18; 21:20, 25; 22:19)।
2. बपतिस्मा लिया – एक बार (प्रेरितों 8:16)।
3. मन फिराया – एक बार भी नहीं।
4. अंगीकार किया – एक बार भी नहीं।

इस तुलना से स्पष्ट हो जाता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में मन फिराने और अंगीकार करने की तुलना में विश्वास करने और बपतिस्मा लेने का उल्लेख अधिक बार हुआ है। मसीही बनने वालों के विषय में बताते हुए, प्रेरितों के काम की पुस्तक आम तौर पर बताती है कि उन्होंने विश्वास किया और/या बपतिस्मा लिया था; परन्तु किसी भी आयत में यह नहीं लिखा गया है कि उन्होंने मन फिराया या अंगीकार किया।

पौलुस के पत्रों में बपतिस्मा

पौलुस ने कलीसियाओं के नाम अपनी अधिकतर पुस्तकों में नई वाचा के बपतिस्मे का उल्लेख किया है (रोमियों 6:3, 4; 1 कुरिन्थियों 1:13–17; 12:13; गलतियों 3:27; इफिसियों 4:5; कुलुस्सियों 2:12)। उसने कलीसिया के सदस्यों को बपतिस्मे के स्वाभाविक फल के रूप में यीशु के प्रति अपना समर्पण जारी रखने के लिए उत्साहित किया। पौलुस ने बपतिस्मे को नये जीवन की शुरुआत (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12, 13), अपराधों की क्षमा (कुलुस्सियों 2:13), यीशु को पहनने (गलातियों 3:27), विश्वासियों के एक होने (1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:27, 28; इफिसियों 4:1–6) से जोड़ा। पौलुस ने बपतिस्मे का उल्लेख किया परन्तु विश्वास, मन फिराव या अंगीकार से इसके सम्बन्ध के बारे में कुछ नहीं बताया। उसने दूसरी आयतों में बपतिस्मे का संकेत दिया होगा (इफिसियों 5:26; तीतुस 3:5)।

पतरस के लेखों में बपतिस्मा

पतरस ने विश्वास का उल्लेख ग्यारह बार (1 पतरस 1:8, 21; 2:6, 7; 1 पतरस 1:5, 7, 9, 21; 5:9; 2 पतरस 1:1, 5) परन्तु उद्धार के सम्बन्ध में केवल एक बार ही किया (1 पतरस 1:9)। एक बार उसने मन फिराव की बात की (2 पतरस 3:9), जिसे उसने कहा कि परमेश्वर सब लोगों से चाहता है। अंगीकार का उल्लेख उसने कभी नहीं किया।

उसने हमारे उद्धार से नूह और उसके परिवार के छुटकारे की तुलना की:

> और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)। वह स्वर्ग पर जाकर

परमेश्वर के दहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूतों और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं (1 पतरस 3:20, 21)।

सारांश

बपतिस्मे के विषय में सबसे पहले यूहन्ना ने, फिर यीशु ने, फिर प्रेरितों व प्रारम्भिक कलीसिया ने सिखाया। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद, बपतिस्मा उन लोगों को दिया जाता था जिन्हें सुसमाचार सिखाया जाता था, वे यीशु में विश्वास लाते थे, अपने पापों से मन फिराते थे और परमेश्वर के साथ नए सम्बन्ध और जीवन की इच्छा करते थे। बपतिस्मे को वह स्थान माना जाता था जहां परमेश्वर के साथ गलत सम्बन्ध को यीशु के लहू के द्वारा सही कर दिया जाता था और यह वह क्षण था जब नया जीवन आरम्भ होता था।

बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से है या मनुष्य की ओर से?

यूहन्ना ने परमेश्वर को ''जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा'' के रूप में पहचाना (यूहन्ना 1:33)। यह पूछकर कि ''यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?'' (मत्ती 21:25क) यीशु ने यह बताया कि यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था।

लूका ने भी बपतिस्मे को परमेश्वर की योजना के भाग के रूप में पेश किया: ''पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकर *परमेश्वर की मनसा* को अपने विषय में टाल दिया'' (लूका 7:30)।

फरीसियों ने बपतिस्मे के महत्व को समझा और यूहन्ना से पूछा, ''यदि तू न मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह भविष्यवक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?'' (यूहन्ना 1:25)। उन्होंने उचित रूप से परमेश्वर के महान लोगों के साथ पहचान होने की प्रक्रिया के लिए बपतिस्मे को जोड़ा।